RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-06
June-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

ग्वालियर जिले का भूमि उपयोग अध्ययन

शालिनी अस्थाना

शोधार्थी, (भूगोल)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 June 2019

Keywords
जनसंख्या दवाब पर्यावरणीय मौसम

***Corresponding Author**
Email: shalinigeetika.17[at]gmail.com

ABSTRACT

जनसंख्या दवाब व दिन ब दिन बढ़ती पर्यावरणीय समस्याओं के कारण भूमि उपयोग की ओर ध्यान दिया जाने लगा है। इस अध्ययन का उद्देश्य ग्वालियर जिले में भूमि उपयोग की स्थिति का अध्ययन करना है। जिले में अधिकांश जनसंख्या नगरीय है अतः यहां भूमि का विकास नगरीय जनसंख्या की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है जिसका प्रभाव कृषि भूमि क्षेत्र पर भी पड़ता है। मौसम की दृष्टि से भी यह क्षेत्र दीर्घावधि ग्रीष्मकाल व कम वर्षा वाला है अतः यहां भूमि का समुचित उपयोग करना आवश्यक हो जाता है।

प्रस्तावना :–

मानव और भूमि का संबंध सृष्टि के प्रारंभ से ही रहा है इसलिये प्रारंभ से ही भूमि को श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। यह हमारा बुनियादी संसाधन है जिस पर आर्थिक व सामाजिक कार्यों का निष्पादन किया जाता है। भूमि ही कई जीवन रक्षक प्रणालियों का आधार है यह भोजन, पशुओं के लिए चारा, लकड़ी व अन्य जैविक पदार्थों को प्राप्त करने का स्त्रोत है। ग्लोबल ऊर्जा के संतुलन को बनाये रखने व सूर्य ऊर्जा को अवशोषित व परावर्तित करने का आधार भूमि ही है। भूमि मानव द्वारा निर्मित नहीं है जिसका हम संशोधन कर सकें या आवश्यकतानुसार वृद्धि कर सकें। भूमि का महत्व हमारे ग्रथों में भी उल्लेखित किया है साथ ही उसके उचित उपयोग के बारे में भी बताया गया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी इसका महत्व है क्योंकि यहां की भौगोलिक परिस्थितियां ही पर्यावरण को अनुकूलित कर निवास योग्य वातावरण कायम रखने में सक्षम हैं। वर्तमान में भूमि के अति उपयोग व त्रुटिपूर्ण उपयोग के कारण कई समस्यायें सामने आईं हैं। इसका समाधान यही है कि भूमि का उचित उपयोग किया जाये।

शोध क्षेत्र :–

ग्वालियर जिले का प्रारंभ से ही राजनैतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व रहा है। यह क्षेत्र दक्षिण पश्चिम में मालवा के पठार तथा उत्तर पूर्व में गंगा के विशाल मैदान के संगम पर स्थित है। पूर्व पश्चिम क्षेत्र घने वनों से आच्छादित है। इसके उत्तर में मुरैना, पश्चिम में शिवपुरी, पूर्व में भिंड तथा दक्षिण में दतिया जिला है।

जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4565 वर्ग किलोमीटर है। जिसमें 2011 की जनगणना के अनुसार 2032036 जनसंख्या निवास करती है। जिसमें 62.68 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या तथा 37.31 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या है। जिले में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत अधिक है जिसका कारण ग्वालियर में तेजी से हो रहे शहरीकरण की प्रवृत्ति है जिसका प्रभाव यहां के भूमि उपयोग पर पड़ता है।

भूमि उपयोग प्रतिरूप :–

प्रागैतिहासिक काल से ही मानव विकास और भूमि उपयोग प्रतिरूप ने पर्यावरण को प्रभावित किया है। वर्तमान भूमि प्रतिरूप पिछली विकास की गतिविधियों का ही परिणाम है। भूमि वितरण भी असमान है। जिले में कुछ क्षेत्र बंजर हैं तो कुछ उपजाऊ। जिले की भूमि धूसर व भूरी है। ऊपरी परत के नीचे चट्टानें होने के कारण प्राकृतिक अवस्था में कृषि योग्य नहीं हैं। यहां स्थित घाटी व दक्षिण ढलान क्षेत्र वनस्पतियों के अनुकूल हैं किन्तु उत्तर व उत्तर पश्चिम क्षेत्र वनस्पतियों व झाड़ियों के अनुकूल नहीं है। घाटीगांव व आरोन की भूमियां उथली, कंकरीली व हल्की बनावट वाली हैं। ये भूमियां कहीं भूरी तो कहीं लालपन लिये हैं जो कम उपजाऊ भूमियां हैं।

भूमि उपयोग सीमायें :–

भूमि उपयोग की सीमाओं की अवहेलना के कारण ही आज भूमि उपयोग संकट उत्पन्न हुआ है। यदि भूमि का उपयोग कृषि, वन, आवास जैसी मुख्य आवश्यकताओं के रूप में ही किया जाये तो भूमि को आने वाले समय के लिये संरक्षित रखा जा सकेगा। जिले में भी अन्य निर्माणक कार्यों के लिये वनों को प्रति वर्ष काटा जा रहा है।

भूमि उपयोग परिवर्तन :–

किसी क्षेत्र में अपने उद्देश्य से अलग भूमि का उपयोग विभिन्न आशय से होना ही भूमि उपयोग परिवर्तन है। समय, काल व परिस्थिति के अनुसार भूमि उपयोग में परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगते हैं। कभी कभी भूमि उपयोग बदलने जैसे कृषि योग्य भूमि को अन्य उपयोग में लेने से तथा भूमि में

RRIJM 2015, All Rights Reserved

बीज बोने के तरीके, आधुनिक कृषि पद्धतियां आदि ने भी भूमि उपयोग को काफी प्रभावित किया है।

जिले में तीव्र जलवायु परिवर्तन की दशाओं तथा वर्षा की कमी, बढ़ता नगरीकरण आदि ने भी भूमि उपयोग को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। पिछले वर्षों से ग्वालियर जिला जलवायुविक दृष्टि से भी आंशिक सूखे के क्षेत्र से सूखा क्षेत्र बनता जा रहा है। अंधाधुंध वनों की कटाई ने भी भूमि संरचना में नमी का हास किया है। कभी कभी परिवर्तन की प्रक्रिया इतनी धीमी होती है कि इसके प्रभाव काफी लंबे समय के पश्चात देखने को मिलते हैं :

वर्तमान भूमि उपयोग 2010–2014 **हेक्टेयर में**

वर्ष	वन क्षेत्र	कृषि योग्य अनुपलब्ध भूमि	अन्य अकृषि भूमि (परती शामिल नहीं)	कृषि योग्य बंजर भूमि	पड़त भूमि	शुद्ध बोया क्षेत्र
2010–11	111048	82648	13985	23912	19070	205786
2011–12	111048	82595	13971	23864	17622	207349
2012–13	111048	82732	13942	24063	14828	209836
2013–14	111048	82717	13959	23953	13414	211358

स्त्रोत : जिला सांख्यिकीय पुस्तिका 2014

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि वन भूमि क्षेत्र में कोई परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है तथा ग्वालियर वन क्षेत्र में एक प्रतिशत भी वृद्धि नहीं हुई है।

कृषि योग्य अनुपलब्ध भूमि वह है जो कृषि के अतिरिक्त अन्य कार्यों में प्रयुक्त की जा रही है जिसका उपयोग वाणिज्यिक, उद्योग, बाजार, सड़कें आदि अन्य कार्यों के लिए किया जा रहा है। इस भूमि क्षेत्र में जिले में उतार चढ़ाव की स्थिति रही है किंतु 2010–11 में इसका क्षेत्र 82648 हेक्टेयर था जबकि 2013–14 में यह क्षेत्र बढ़कर 82717 हेक्टेयर हो गया। इस वृद्धि की गति सामान्य है किन्तु समय के साथ क्षेत्र में और अधिक विकास होने के साथ ही इस प्रकार की भूमि में वृद्धि होना स्वाभाविक है।

अकृषि भूमि में झाड़, झंझाड़, कृषि योग्य बंजर भूमि तथा स्थायी चरागाह को शामिल किया गया है। भूमि को साफ कर इस प्रकार की भूमि को खेती के योग्य बनाया जा सकता है। जिले में इस प्रकार की भूमि 2010–11 में 13985 हेक्टेयर थी जो 2011–12 में घटकर 13971 हेक्टेयर हो गयी। 2012–13 में पुनः घटकर 13942 हेक्टेयर हो गयी वहीं 2013–14 में बढ़कर 13959 हेक्टेयर बढ़त हुई। इस प्रकार जिले में अकृषित भूमि 2010–11 की तुलना में 2013–14 में कम हुयी है।

कृषि योग्य बंजर भूमि वह है जो कॉफी लंबे समय तक बिना किन्हीं कृषि कार्यों के रिक्त पड़ी हैं इस संवर्ग में सम्मिलित की जाती हैं। भूमि सुधार तकनीक द्वारा इसे सुधारकर कृषि योग्य बनाया जा सकता है। जिले में 2010–11 के अनुसार बंजर भूमि का क्षेत्र 23912 हेक्टेयर था जो 2011–12 में घटकर 23864 हेक्टेयर हो गया। 2012–13 में 24063 हेक्टेयर बढ़ा है जबकि 2013–14 में पुनः घटकर 23953 हेक्टेयर हो गया । अतः कृषि योग्य बंजर भूमि की जिले में उतार चढ़ाव की स्थिति रही है। जिले में बंजर भूमियां छोटे छोटे भागों में बंटी हुई हैं जिन्हें सुधारकर कृषि योग्य बनाया जा सकता है।

परती भूमि वह है जिसे एक वर्ष या कुछ समय के लिये खाली छोड़ दिया जाता है क्योंकि लगातार कृषि करने के कारण इस भूमि की उपजाऊ शक्ति कम होने लगती है। इस भूमि को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है–

1. वर्तमान परती भूमि
2. पुरातन परती भूमि

जिले में 2010–11 में पड़त भूमि का कुल कृषि क्षेत्र 19070 हेक्टेयर था जो 2011–12 में घटकर 17622 हेक्टेयर हो गया वहीं इसके बाद इसके क्षेत्र में कमी आयी है। 2012–13 में 14828 हेक्टेयर तथा 2013–14 में 13414 हेक्टेयर क्षति हुई।

शुद्ध बोया क्षेत्र भी कृषि विकास में महत्वपूर्ण क्षेत्र है। 2010–11 में शुद्ध बोया क्षेत्र 205786 हेक्टेयर था जो 2011–12 में बढ़कर 207349 हेक्टेयर तथा 2012–13 में 209836 तथा 2013–14 में 211358 हेक्टेयर प्राप्त हुआ। अतः इस क्षेत्र में लगातार वृद्धि प्राप्त हुई है।

जिले के भौतिक, आर्थिक व सामाजिक तत्वों का भूमि पर प्रभाव पड़ता है। यहां की परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार भूमि उपयोग में परिवर्तन देखने को मिलता है। जिले में इसका कारण यहां की कम वर्षा व अधिक उच्च तापमान आदि हैं। यहां शिक्षा तथा रोजगार व व्यापार आदि के कारण बाहर से आने वाले युवकों के कारण जनसंख्या में वृद्धि हुई है जिसका दवाब भूमि उपयोग पर पड़ा है अतः बढ़ती जनसंख्या के लिये सीमित भूमि उपयोग पर बुनियादी आवश्यकताओं की व्यवस्था करना अत्यंत आवश्यक है।

जिले में भूमि का उपयोग कृषि भूमि के अतिरिक्त उद्योग, वन, रेलवे, सड़क आदि अन्य कार्यों के लिये भी किया जाता है :

भूमि का अन्य उपयोग–2015

क्रमांक	अन्य उपयोग	इकाई	सांख्यिकीय
1.	कुल उद्योग	नम्बर	1610
2.	वन	हेक्टेयर	109,200
3.	रेलवे परिवहन	किलोमीटर	339
4.	सड़क परिवहन (i) राष्ट्रीय मार्ग (ii) राज्य मार्ग	किलोमीटर	 210 250

RRIJM 2015, All Rights Reserved

	(iii) मुख्य जिला मार्ग (iv) अन्य जिला/ग्रामीण सड़कें		180 200

Source- Industrial Profile Of Gwalior District, M.P. 2015-16

निष्कर्ष :–

जिले में वर्तमान निर्मित क्षेत्रों के कारण प्राकृतिक भूमि का ह्रास हुआ है जिससे भूमि उपयोग में परिवर्तन देखने को मिलता है। जनसंख्या वृद्धि के साथ ही मानव की आवश्यकताओं में भी वृद्धि हुई है। अतः इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यवसाय व उद्योग तथा आवास आदि के लिए भूमि का उचित वितरण किया जाना आवश्यक है जिससे जिले में कृषि व वन भूमि को संरक्षित किया जा सके। भूमि की क्षमतानुसार ही भूमि का वितरण भूमि के विकास में सहायक होगा। भूमि संबंधी समस्याऐं काफी जटिल हैं और जो समस्याऐं उत्पन्न हों चुकी हैं उन्हें एकाएक सही नहीं किया जा सकता किंतु भूमि को लम्बे समय तक उचित देखभाल व उसका पोषित विकास भूमि उपयोग में सहायक होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. ग्वालियर इतिहास, संस्कृति एवं पर्यटन– डॉ. एच. बी. माहेश्वरी, जैसल
2. ग्वालियर जिला गजेटियर– व. सु. कृष्णन
3. जिला सांख्यिकीय पुस्तिका– 2014
4. भारत का वृहद् भूगोल– सुरेश चन्द्र बंसल– मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ
5. Industrial Profile Of Gwalior District, M.P. 2015-16

RRIJM 2015, All Rights Reserved